International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 9, September 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बुन्देलखण्ड की लोककला में प्रकृति सौन्दर्य

जयराम
भोधार्थी(ललित कला)
एवं
श्रीमती सुनीता कपूर
सहा0 आचार्य (ललित कला)
ललित कला संस्थान, बुन्देलखण्ड वि वविद्यालय, झांसी

सारां ा:विभाव, अनुभाव व संचारिभावों के योग से मनुश्य के ह्रदय में विभिन्न रसों का संचार होता है।भारतीय एवं पा चात्य साहित्यों में ''सौन्दर्य'' के विविध पक्षों पर विभिन्न प्रकार से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में विचार किया गया है। भारतीय वांगमय में सौन्दर्य की वस्तुपरक और भावपरक अर्थछायाओं को अभिव्यक्त करने के लिए सुन्दर, रूचिर, चारू, सुशमा, साधु, भाोभन, कान्त, मनोरम, रूच्य, मनोज्ञ, श्री, मंजू, मंजुल, रमणीय, ललित और सुश्ठ आदि पर्याय भाब्दों का प्रयोग मिलता है।ही सौन्दर्य बुन्देलखण्ड में प्रचलित लोककलाओं का वि ोश गुण है। यहाँ के लोक गीत यदि कानों को माधुर्य प्रदान करते हैं, तो यहाँ के लोकवाद्य सरसता। बुन्देलखण्ड का लोक नृत्य आनन्द की ऐसी सुशमा बिखेरता है कि ह्रदय प्रफुल्लित हो उठता है।

क. परिचय

''कला'' भाब्द सौन्दर्य की अभिव्यक्ति का द्योतक है। रेखा, चेश्ठा,वाक्, अर्थ, अंकन, रंजन, तक्षण आदि किसी भी प्रकार से मानव द्वारा सौन्दर्य की अभिव्यक्ति करने पर वह कला बन जाती है।[1] भारतीय कला में यहाँ के मस्तिश्क और हस्तकौ ाल का सर्वोत्तम प्रमाण पाया जाता है। भारतीय कला की सामग्री वैसे ही समृद्ध है जैसे भारतीय साहित्य, धर्म व द न की।

डॉ0 वासुदेवभारण अग्रवाल

[1] के अनुसार ''भारतीय कला का सौन्दर्य और अर्थ विद्वानों और रसिकों के मन में पूरी तरह बस गया है। भारतीय कला और वास्तु के सम्बन्ध में अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं। कला का सृजनकर्ता मानव स्वयं ही है। यही कारण है कि प्रकृति स्वयं एक अद्भुत रचना होने पर भी कला नहीं कही जा सकती, क्योंकि वह दैवीय है। प्रकृति का सौन्दर्य जितना अभिराम, अनुपम तथा अद्भुत है, कलाकार की कला वैसे नहीं हो सकती। किन्तु जब मानव प्रकृति के उपादानों में अपनी कल्पना का समावे ा करके उन्हें प्रस्तुत करता है तब वही कला के नाम से जानी जाती है।[2]

ख. बुन्देलखण्ड की लोक कलाओं में सौन्दर्य–

विभाव, अनुभाव व संचारिभावों के योग से मनुश्य के ह्रदय में विभिन्न रसों का संचार होता है। इन्हीं सौन्दर्यमय रसो का आस्वादन बुन्देलखण्ड की लोक कलाओं व हस्ति ाल्पों मे देखने को मिलता है। वस्तुतः लोक कलाएँ भाास्त्रीयता के बन्धनों से मुक्त सरल सहज रूप में मनुश्य के अन्तस् में छिपी विभिन्न सौन्दर्यमयी भावों का बोध कराती हैं। क्योंकि सौन्दर्य एक सार्वभौमिक तत्त्व है। भारतीय एवं पा चात्य साहित्यों में ''सौन्दर्य'' के विविध पक्षों पर विभिन्न प्रकार से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में विचार किया गया है। भारतीय वांगमय में सौन्दर्य की वस्तुपरक और भावपरक अर्थछायाओं को अभिव्यक्त करने के लिए सुन्दर, रूचिर, चारू, सुशमा, साधु, भाोभन, कान्त, मनोरम, रूच्य, मनोज्ञ, श्री, मंजू, मंजुल, रमणीय, ललित और सुश्ठ आदि पर्याय भाब्दों का प्रयोग मिलता है। वास्तव में सौन्दर्य सारगर्भित एवं लोकमंगल की कामना से पूर्ण है। सौन्दर्य ऐन्द्रिय भी है और अत्येन्द्रिय भी।[3] यही सौन्दर्य बुन्देलखण्ड में प्रचलित लोककलाओं का वि ोश गुण है। यहाँ के लोक गीत यदि कानों को माधुर्य प्रदान करते हैं, तो यहाँ के लोकवाद्य सरसता। बुन्देलखण्ड

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 9, September 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

का लोक नृत्य आनन्द की ऐसी सुशमा बिखेरता है कि हृदय प्रफुल्लित हो उठता है।

बुन्देलखण्ड में होने वाला राई आकर्शण का वि ोश केन्द्र बना रहता है साथ ही नवरात्रि में होने वाला नृत्य धार्मिक श्रद्धा के कारण वि व का आकर्शण का केन्द्र बना हुआ है। इस नृत्य में पहने जाने वाली पारम्परिक वे ाभूशा कान्ति से पूर्ण होती है जो वातावरण को ओर भी अधिक सुन्दर बना देती है। क्योंकि लोक नृत्य व लोकसंगीत की अपनी एक वि ोशता होती है इसमें परम्परागत रूप से चला आ रहा मांगलिकता व सांस्कृतिक प्रेम झलकता है। यहाँ विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले लोकगीत एक ओर तो वात्सल्य उत्पन्न करते हैं वहीं यहाँ के गीतों में होने वाला राजाओं का गान वीरता के भाव को प्रबल करता है।

बुन्देलखण्ड को लोक संगीत के साथ–साथ जत जाति के लोगों के द्वारा बजाए जाने वाले वाद्य यंत्रों के स्वरों से एक आकर्शण की प्रतीति होती है तो रात्रि में समुह में बजाए जाने वाले मुरली वाद्य से अद्‌भुत वातावरण की। लोक कलाएँ मनोविनोद का साधन होती हैं प्रायः ये कलाएँ अलंकरण, पूजन व श्रृंगार का सरल एवं साधारण प्रस्तुतिकरण हैं। बुन्देलखण्ड के घरों की भित्तियों पर होने वाला लीपन व चित्रण सौन्दर्यात्मक अभिव्यक्ति का एक अद्‌भुत उदाहरण है। कॉंच के अलंकरण से अलंकृत विभिन्न मनुश्याकृतियाँ, प्रकृति व अन्य आकार यहाँ के लोक जीवन में कलात्मक सौन्दर्य का स्पन्दन करते प्रतीत होते हैं। वहीं विभिन्न रंगों से किया गया भित्तिचित्रण व आकारों का रेखांकन लोक जीवन की दृढता पूर्णता व सरसता को दिखाता हुआ आत्मिक सौन्दर्य की अनुभूति कराता है।

बुन्देलखण्ड की महिलाएँ स्वयं के सौन्दर्य वर्धन में भी रूचि रखती हैं गोदना यहाँ के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, जो इस क्षेत्र की महिलाओं के सौन्दर्यवर्धन का परम्परागत रूप से महत्त्वपूर्ण साधन है। भारीर के अंगों पर बने प्रतीक चिन्ह मांगल्य के सुचक होते हैं। इसी प्रकार लोक उत्सवों पर घरों में होने वाले विभिन्न अलंकरण धर्म के प्रति श्रद्धा व अनुराग को प्रकट करते हैं। वस्तुतः इन लोक अलंकरण में बनने वाले प्रतीकों का अपना एक महत्व व अर्थ होता है। बुन्देलखण्ड में इन सभी प्रतीकों का प्रयोग विभिन्न उत्सवों, त्योहारों व हस्त ाल्पों में भी विभिन्नता से देखने को मिलता है। जिसके पीछे धार्मिक भावना के साथ–साथ सौन्दर्य का भाव भी प्रबल रहता है। यहाँ इन प्रतीकों का प्रयोग भिन्न–भिन्न आकार व प्रकार के साथ–साथ विभिन्न रंगों के द्वारा किया जाता है। जिसका एक मात्र उद्दे य जीवन को उल्लासमय व रंगों से परिपूर्ण बनाना है। किन्तु इन प्रतीकों का अपना ही एक महत्त्व होता है। जो जीवन को किसी न किसी रूप में प्रभावित करता है। प्रायः इन प्रतीकों के कुछ अर्थ होते हैं। यें जीवन में भाुभ और मांगल्य के सूचक माने जाते हैं। जिनमें से मुख्य का वर्णन निम्नवत् है–

ग. बुन्देलखण्ड की लोककलाओं में प्रतीकात्मक सौन्दर्य–

मनोकामना द्वारा प्रेरित होकर मानव बहुधा व्रत–उत्सव मनाता है और उसी को पुरा करने के विचार से अनुश्ठान एवं धार्मिक कृत्य आदि करता है। उपासना करना अथवा उत्सव मनाना दोनो ही अनुश्ठान हैं। परन्तु उपासना कोई भी मानव करता है और आत्मसंतोश उसका लक्ष्य होता है। इसके विपरीत उत्सव दस–बीस मनुश्यों से संबन्धित होता है और कामना को चरितार्थ करके सामूहिक आनन्द का उपभोग उसका ध्येय होता है। आरम्भ में अधिकां ातः उत्सव लोकोत्सव थे परन्तु भानैः– ानैः पुराणोक्त सनातन देवी–देवता हिन्दू संस्कृति के विकास के साथ–साथ धार्मिक व सामाजिक बनते गये और अब इनमें जातिगत रीति–रिवाजों का भी अनोखा सम्मिश्रण हो गया है।[4] ये पर्व या रिति–रिवाज किसी भी दे ा की सांस्कृतिक निधि होते हैं आरै उस दे ा की वि ाश्टता तथा आत्मा को साकार करते हैं। इन्हीं पर्वों, उत्सवों तथा रीति–रिवाजों से सम्बद्ध सांस्कृतिक लोककला भी, जो भूमि एवं भित्ति व अन्य अलंकरणों के रूप में पायी जाती है, समाज में अपना एक वि ाश्ट स्थान रखती है। विभिन्न उत्सवों और त्योहारों के अनुसार इनके अलंकरणों में विविधता दृश्टिगोचर होती है। इनके साथ मनाये जाने वाले अभिप्रायों का अपना एक वि ोश अर्थ और महत्त्व होता है। लोक सांस्कृतिक कला में प्रयोग आने वाले परम्परागत अभिकल्प बिन्दु, रेखाएँ, (आड़ी, पड़ी व तिरछी) त्रिभुज, सम्फुटिक दो त्रिभुज, चतुर्भज, बहुभुज, पंचभुज, ाश्ठभुज, सप्तभुज, अश्ठभुज, स्वास्तिक, ऊँ , वृत्त, कोण, विभिन्न देवी–देवता तथा उनके आयुध, भांख, चक्र, गदा, पद्म, हाथी, नाग, मछली, तोता, मोर, तरह–तरह की लताएँ, फल, फूल, इत्यादि हैं। प्रायः सभी अभिप्रायों के अपने गूढ़ अर्थ होते

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 9, September 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हैं। जिनमें से मुख्य का विवरण निम्नवत है–

स्वस्तिक :– बुन्देलखण्ड की लोककलाओं में स्वस्तिक चित्रण का बहुत महत्त्व है। यहाँ घरों की भित्तियों में होने वाले चित्रण में स्वस्तिक का चित्रण अति भाुभ माना जाता है। घरों के साथ–साथ भारीर पर किये जाने वाले गोदना चित्रण में भी विभिन्न आकारों के स्वस्तिक का चित्रण मिलता है। यहाँ परम्परागत रूप से होने वाली वस्त्रों की कसीदाकारी में भी इसी प्रकार का चित्रण है। वस्तुतः स्वस्तिक मानव जीवन का एक विलक्षण प्रतीक है। स्वस्तिक की एक वि वव्यापी परम्परा रही है। भारत में स्वस्तिक की परम्परा अत्यन्त प्राचीन काल से लेकर आजतक निरन्तर पायी जाती रही है। स्वस्तिक की व्यापक महत्ता भारतीय द र्शन में स्वीकार की गयी है। (चित्र सं–01)[5]

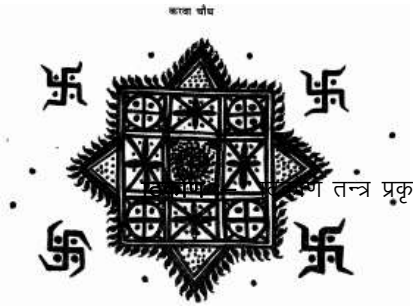

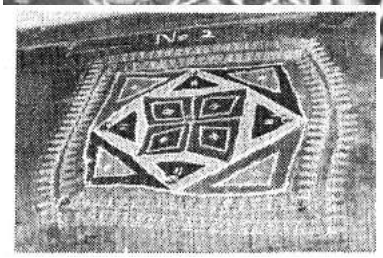

... तन्त्र प्रकृति और पुरूश का सम्मिलित रूप द ार्ता है। इन्हीं दो तत्त्वों के चारों ओर समस्त वि

वृत्त :–बुन्देलखण्ड में वृत्त का प्रयोग वस्त्रों व भित्तियों पर हुए विभिन्न अलंकरणों में होता है। यह अनन्त, ब्रह्माण्ड व सम्पूर्णता के प्रतीक के साथ–साथ वायु, आका ा, एवं नाद का भी प्रतीक है। यह एक बिन्दु से आरम्भ होकर भँवर की भाँति गति द ार्ता है, इसलिए सदैव गति एवं तनाव से पूर्ण रहता है। इसने अपने बिन्दु से जन्म लिया है, इसलिए तत्त्वार्थ के अनुसार यह चालक पर आश्रित है। तन्त्र भाास्त्र में इसे मण्डल के रूप में माना जाता है।[7]

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 9, September 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

चक्र **(सूर्य)**

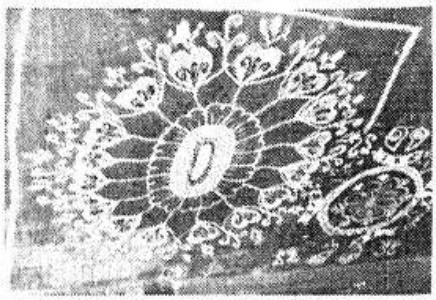

:–चक्र मानव सभ्यता के विकास की कुंजी है। बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति का मुख्य आकर्शण यहाँ की कलाओं व हस्त ाल्पों में ही निहित है। यहाँ के विभिन्न रंग–बिरंगे हस्त ाल्प हृदय में रसों की एक धारा प्रवाहित कर देते हैं। बुन्देलखण्ड के लोकगीत, लोकवाद्य, लोकनृत्य, व त्योहार आदि उत्साह उल्लास से पूर्ण जीवन सौन्दर्य का द ान कराते हैं। यह सूर्य का भी प्रतीक होता है। बुन्देलखण्ड में इसका चित्रण अलग–अलग आकार में किया जाता है।

घ. प J–पक्षी चित्रण :–

लोक मानव के जीवन में जो जितना अधिक सहयोग देता है, वह उतना ही उसका पूज्य है। भारतीय संस्कृति प J–पक्षियों को भी मनुश्यों के समान पूज्य समझती है। इसीलिए अनेक प J–पक्षियों की उपयोगिता इन देवी–देवताओं के वाहन के रूप में है, जैसे हाथी, चूहा, बैल, ानर, घोड़ा, हंस व मोर आदि। बुन्देलखण्ड में भी इस प्रकार के अनेक चित्रण देखने को मिलते है जो आस्था व श्रद्धा का प्रतीक है।

हाथी :– हाथी इन्द्र का वाहन है, गणे ा जी से इसका मुख्य सम्बन्ध है। यह भाक्ति, विद्वत्ता तथा दृढता का प्रतीक है। हाथी ऐ वर्य का प्रतीक है और ऐ वर्य के रक्षक एवं सेवक के रूप में इसका अंकन गज–लक्ष्मी के चित्रों एवं प्रतिमाओं में अविकल रूप से हुआ है। इसको समुद्र से निकले चौदह रत्नों में सम्मान मिला है। कमल के साथ भी इसका सम्बन्ध कल्पित है। मेघों एवं वीर पुरूशों की गर्जना, वीरों का द्वन्दयुद्ध और मदमस्त चाल की उपमा हाथी से दी गई है।

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 9, September 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वृशभ एवं गाय :–यह ि ाव का वाहन तथा कृ ाकों का बन्धु है। इसे भूमि, आर्द्रता, स्वर्ग, पिता आदि का भी प्रतीक माना जाता है। वैदिक दवे ता सूर्य की सौर उर्जा वृशभ को ही माना जाता है। बुन्देलखण्ड अपनें जीव–जन्तुओं के लिए वि ोश रूप से प्रसिद्ध है। सभी जीव–जन्तुओं में गाय एवं बैलों (वृशभ) का वि ाश महत्त्व है एवं वृशभ का पूजन एवं वस्त्र कसीदाकारी एवं भित्ति चित्रणों एवं अलंकरणों के लिए इसका चित्रण प्रमुख रूप से देखा जाता है।

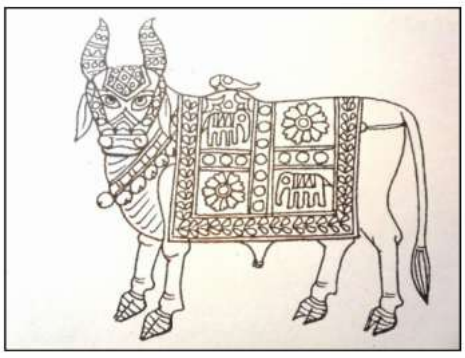

अ व :– इसको भाक्ति का प्रतीक माना जाता है। जल में से अ व की उत्पत्ति के द्वारा अंतरिक्ष में से ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति को प्रस्तुत किया गया है। यह सूर्य, चन्द्र, भुक्र एवं बृहस्पति के वाहन के रूप में प्रसिद्ध है। वैदिककाल से ही राजसूय यज्ञ अ वमेघ यज्ञ होते थे।

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 9, September 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

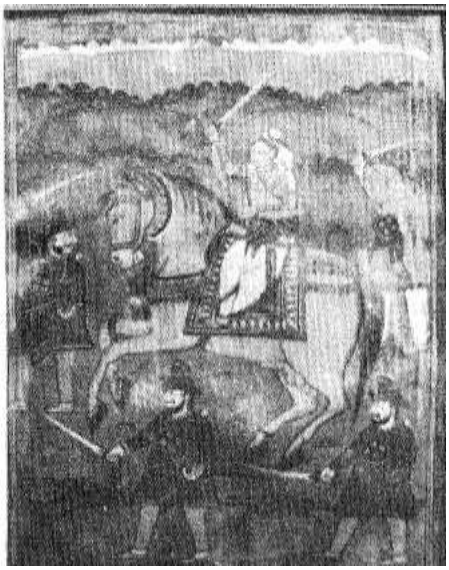

वानर :– मानव का आदि रूप है वानर। वानर हनुमान के वं ाज होने के कारण पूज्य व मान्य हैं। इनको दूत कहा गया है, इनके द र्शन भाुभ माने जाते है ।

सर्प :– इनको लोक धर्म का देवता कहा गया है। सर्प तीव्र गति, मार्ग की कठिनता का सूचक है। इसका केंचुली छोडना आत्मा का बन्धन त्यागना माना जाता है। नागपास सांसारिक मोह का प्रतीक है। संक्षेप में यह इच्छाओं, जल, भाक्ति, काल, तम, स्थान व अनन्त का प्रतीक है। ि ाव के गले का हार भी सर्प है। बुन्देलखण्ड में नाग पंचमी के अवसर पर इसका चित्रण मुख्य रूप से किया जाता है।

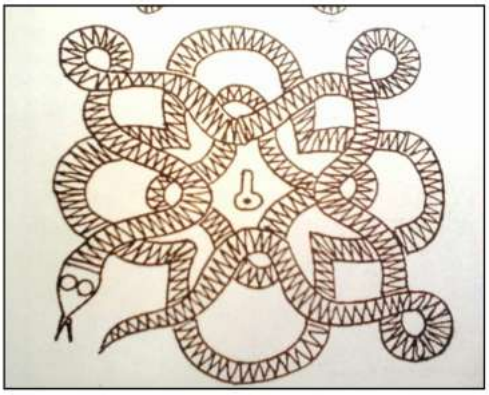

मोर :– यह ुद्ध भाकाहरी पक्षी होता है। सुख, समृद्धि, खु ाहाली एवं प्रेम का प्रतीक माना जाता है।

कपोत :– इसे भाान्ति का प्रतीक माना जाता है। यह सन्दे ावाहक भी है। यह सबकी अपेक्षा सीधा पक्षी माना जाता है। इसके पंखों की हवा बच्चों के लिए स्वास्थ्य कारक है। यह सुखी दाम्पत्य जीवन का प्रतीक है।

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 9, September 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

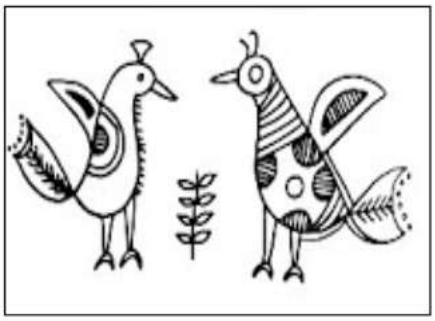

मीन :– इसे सुख–सौभाग्य, सुख–सम्पन्नता का प्रतीक मानते है। मीन को मीन–मीथुन के रूप में जगह–जगह चित्रित किया गया है। यह सृष्टि के उद्‌बोधक दम्पति व सुन्दरता का प्रतीक है। कामदेव के मन्दिरों की यह पताका है।

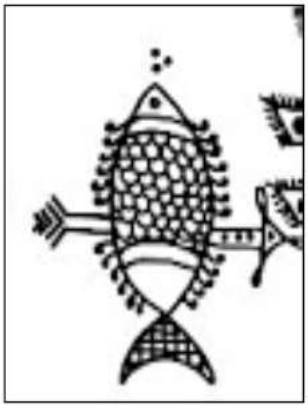

ढ. प्रकृति चित्रण :–

प्रकृति–जीवन से भिन्न नहीं अपितु इसका जीवन से गहन सम्बन्ध है। स्त्री समाज में वनस्पति पूजन का बहुत महत्त्व है। स्त्रियाँ किसी वृक्ष को संतान देने वाला, किसी को सुख–सौभाग्य प्रदान करने वाला मानकर उसकी पूजा करती हैं। ये जीवन की निरन्तरता के सूचक हैं।[8]

वटवृक्ष :– यह अपनी आयु व वि ालता के लिए भाताब्दियों से प्रसिद्ध है। इसकी पत्तियों में भगवान् बाल स्वरूप में विराजते हैं। यह वट–सावित्री अमावस्या के दिन पूजा जाता है।

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 9, September 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कल्पवृक्ष :– इसका जन्म समुद्र–मंथन से हुआ माना जाता है। यह इच्छाओं की पूर्ति करने वाला वृक्ष माना जाता है एवं मन का प्रतीक है। कल्पवृक्ष के नीचे मनुश्य जो कुछ सोचता है वह उसे प्राप्त हो जाता है।

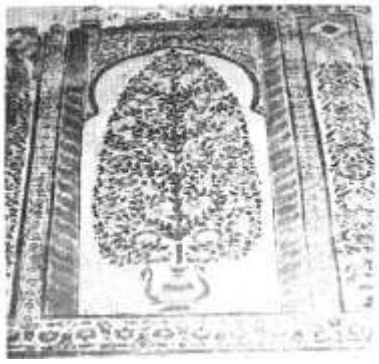

उपसंहार

लीपन कला व कसीदाकरी में कल्पवृक्ष इन सभी प्रतीकों के चित्रण के पीछे छिपी धार्मिक भावना जहाँ एक ओर श्रद्धा व भक्ति का भाव जाग्रत करती हैं वहीं बुन्देलखण्ड में विभिन्न प्रकार से हुआ इनका अलंकरण पूर्ण चित्रण सौन्दर्यात्मक दृश्टिकोण के प्रबल भाव को प्रद ित करता है। स्वस्तिक की चार भुजाएँ जहाँ चहुँमुखी गति का आभास कराती हैं वहीं भित्तियों पर गेरू से हुआ विभिन्न आकारों में इनका चित्रण यहाँ के ग्रामीण लोकजन के रचनात्मक सौन्दर्य को द ार्शाता है।[9] लक्ष्मी के आगमन का सूचक श्रीवत्स का चित्रण व लाल–पीले रंगों से हुआ इसका अलंकरण विभिन्न उत्सवों पर घर की बाह्य भित्तियों पर बनाना भाुभ माना जाता है। इन प्रतीकों की रेखाएँ दृढ व अलंकरण सुरूची पूर्ण लगता है वहीं ाश्ट्कोण का चित्रण घरों की भित्तियों व वस्त्र ि ाल्पों के अलंकरणों में मुख्य रूप से देखने को मिलता है। इसका चित्रण धार्मिक महत्ता के साथ–साथ अलंकरण के उद्दे य से भी किया जाता है। ाश्ट्कोण में बनी रेखाएँ व उनके मध्य बिन्दुओं से हुआ अलंकरण बुन्देलखण्ड में लोकजन के जीवन के नवीन सृजन का बोध कराता है। इस प्रकार ाश्टकोण के अलंकरण में इसके मध्य में छोटे–छोटे आकार के भाी ो लगाए जाते हैं। जो लौकिक सौन्दर्य के विकसित रूप को प्रद ि ात करते हैं। वहीं वृत्त का अंकन एकता के अमूल्य भाव को द ार्शाता है। बुन्देलखण्ड में वृत्त चित्रण के मध्य में हुआ विभिन्न फूल–पत्तियों का अंकन वृत्तरूपी ससांर के मध्य पलित जीवन के सौन्दर्य को प्रकट करता है।

निश्कर्श में कहा जाए तो सौन्दर्याभिव्यक्ति का प्रमुख साधन ''कला'' है[10]चाहे वह किसी भी माध्यम के रूप में हो। बुन्देलखण्ड की प्रायः प्रत्येक कला व ि ाल्प में इसके द ान मिलते हैं। सौन्दर्य चाहे प्रतिकों के रूप में हो या गीतों में अथवा हस्त निर्मित वस्तुओं में यह स्वतः ही आकर्शण का स्रोत बन जाता है और यही आकर्शण बुन्देलखण्ड की लोककलाओं व ि ाल्पों का प्रमुख आधार सिद्ध हुआ है। प्रकृति के आभाव में प्रकृति का चित्रण इस क्षेत्र को रंगमय कर देता है। जिसके कारण दे ा ही नहीं अपितु विदे ाी लोग भी इस ओर आकर्शित होते रहे हैं, व वर्तमान में भी उनके द ान व अध्ययन हेतु यहाँ आते रहते हैं।

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 9, September 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भ ग्रंथ सूची

---

[1] vxoky]okl no"kj.k] Hkkjrh; dyk] Hkkfedk
[2] **भार्मा, भयाम, प्रा0 भ0 क0 वा0 मू0–पृ01**
[3] foj"oj] i dk"ा ,नुपूर भार्मा कला द"ku]i014
[4] Mk0 e/k JhokLro] cUny[k.M dh ykd fp=dyk;
[5] Mk0 e/k JhokLro] cUny[k.M dh ykd fp=dyk;
[6] Mk0 e/k JhokLro] cUny[k.M dh ykd fp=dyk;
[7] uenk ilkn xlr] cUny[k.M dk lkLdfrd ifjp;] i0 32
[8] uenk ilkn xlr] cUny[k.M dk lkLdfrd ifjp;] i0 34
[9] Mk0 e/k JhokLro] cUny[k.M dh ykd fp=dyk;
[10] uenk ilkn xlr] cUny[k.M dk lkLdfrd ifjp;] i0 68